जुटान शृंखला 1

प्रतिरोध में कविता

जुटान लाइव 2020

संपादक

रंजीत वर्मा

अगोरा

आईएसबीएन : 9789388695480
© रंजीत वर्मा
पहला संस्करण : 2021

मूल्य: 220 रुपये (अजिल्द)
499 रुपये (सजिल्द)

अगोरा प्रकाशन
ग्राम- अहिरान, पोस्ट- पचौव, शिवपुर,
जिला- वाराणसी - 221 003 (उत्तर प्रदेश)
मो. : 09479060031, 09454684118

सज्जा : अमन विश्वकर्मा
Email : agoraprakashan001@gmail.com
Website : https://www.agoraprakashan.com

अगोरा प्रकाशन के लिए अपर्णा द्वारा 30 मालती प्रेस, विवेकानंद नगर
वाराणसी से मुद्रित करवाकर प्रकाशित

Pratirodh Me Kavita
Edited By Ranjeet Verma

प्रतिरोध में कविता

बहुत अच्छी बात है कि जुटान में आप लोग जुटे हुए हैं, उसके जरिए बहुत से लोगों की कविताएँ और उनके विचार लोगों तक पहुँचे हैं, तो आपको बहुत धन्यवाद और मुझे लगता है मुझे जो विषय दिया गया है, वो प्रतिरोध का स्वर और एकजुटता का सवाल। तो मैं शुरू करता हूँ। मैं आपसे मुख़ातिब हूँ, अब तक की जो काव्य परम्परा रही है प्रतिरोध की, उस पर थोड़ी हल्की-फुल्की बातें आपसे कर सकता हूँ। देखिए, मुझे लगता है कि कविता, जब-जब जरूरत हुई है उसने प्रतिरोध किया है। ऐसा नहीं कि वह हर समय प्रतिरोध करती रहती है, क्योंकि कोई भी मनुष्य हर समय प्रतिरोध का जीवन नहीं जीता है, जीवन के बहुत से आयाम हैं और बहुत से विस्तार हैं। उन विस्तारों और आयामों में कविता जाती है और जब समाज में या सामाजिक चेतना में ऐसी परिस्थितियाँ होती हैं कि प्रतिरोध जरूरी होता है तो कविता प्रतिरोध करती है। भारतीय भाषाओं में कविता में प्रतिरोध की परंपरा काफी पुरानी है और उसी तरह दुनिया में भी है। मेरे ख्याल से अगर यह देखा जाए कि पाब्लो नेरुदा जो चिली के महाकवि हुए हैं, उन्होंने कहा था कि प्राचीनकाल में कविता अंधकार की शक्तियों से समझौता करती थी। समझौता करने की कोशिश करती थी लेकिन आज की कविता को, आज की कविता की जिम्मेदारी यह है कि वो अंधकार की शक्तियों की व्याख्या करे। अंधकार की शक्तियों की व्याख्या का एक अर्थ यह भी है कि वो उनका प्रतिरोध भी करे, उनकी व्याख्या में ही शायद प्रतिरोध शामिल है, जब-जब मनुष्य विरोधी व्यवस्थाएँ, सत्ताओं में आईं, सत्ताधारी हुई हैं, जब-जब मनुष्य विरोधी व्यवस्थाएँ आई हैं, कविता ने अपना प्रतिरोध का स्वर जारी रखा है। जब-जब समाज में इस तरह की विषम परिस्थितियाँ आई हैं, अन्याय, अत्याचार, दमन, शोषण, असमानता, समाज के कमजोर वर्गों, स्त्रियों, बच्चों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों पर अत्याचार की घटनाएँ सामने आई हैं। या समाज में कुछ बड़े संघर्ष हुए हैं तो कविता में प्रतिरोध का स्वर भी अधिक से अधिक तेज हुआ है।

मंगलेश डबराल

(*जुटान* फेसबुक लाइव पर बोलते हुए)

रजीत वर्मा

रंजीत वर्मा का जन्म 21 अगस्त, 1956 को पटना में हुआ। वे एक कार्यकर्ता कवि हैं जिन्होंने जनता के बीच घूम-घूमकर कविता पाठ और दूसरे सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों में कविता के प्रति दिलचस्पी जगाई। *पीछे न छोड़ते निशान, एक चुप के साथ* और *लकीर कहीं एक खींचनी होगी आपको* उनके प्रकाशित कविता संकलन हैं। इसके अलावा एक कविता संकलन *प्रतिरोध का पक्ष* का संपादन भी किया है। रंजीत वर्मा *पल्लवी, नई संस्कृति, भोर* और *समकालीन तीसरी दुनिया* के संपादन से भी जुड़े रहे। उन्होंने कई अनुवाद भी किए हैं। कई वर्ष तक दिल्ली में फ्री-लांन्सिंग करने के बाद पटना लौटकर फिर से पूर्णकालिक लेखन तथा *जुटान* के अंतर्गत अनेक सांस्कृतिक-सामाजिक कामों में व्यस्त हैं।

संपर्क- 8800535376

E-Mail : verma.ranjeet@gmail.com

अगोरा amazon Flipkart पर उपलब्ध है।

9 789388 695480

अगोरा प्रकाशन
ग्राम अहिरान, पोस्ट चमौंध, शिवपुर
जिला वाराणसी - 221 003 (उप्र)

आवरण सज्जा : अमन विश्वकर्मा

मूल्य : 220/-